(घ) क्या यह सच है कि इस बीमारी का कोई सफल इलाज उपलब्ध नहीं है और इसकी दवाओं की भी कमी है और यदि हां, तो सरकार द्वारा इस संबंध में की गई कार्यवाही तथा उसके परिणामों का ब्यौरा क्या है ?

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री (श्री मोती लाल वोरा) : (क) से (घ) बिहार से मैनिन-जाइटिस के किसी प्रकोप की सूचना नहीं मिली है । उत्तर प्रदेश और दिल्ली स 1988 के दौरान सूचित किए गए रोगियों और मौतों की संख्या इस प्रकार है :–

	रोगी	मौतें
उत्तर प्रदेश	164	33
दिल्ली	2332	453

सरकार मैनिनजाइटिस के रोगियों का पता लगाकर और उनका उपयुक्त एन्टी-बायोटिक औषधों जैसे पेंसिलीन/क्लोरेके-फेनिकोल आदि से उपचार करके इस रोग की मानीटरिंग करने तथा इस पर नियंत्रण पाने के लिये उपयुक्त उपाय कर रही है, ताकि इस रोग की मृत्यु दर को कम किया जा सके । स्कूली स्वास्थ्य कार्यक्रम के चिकित्सा अधिकारी भी स्कूली बच्चों में रोगियों का पता लगाने में विशेष सावधानी बरत रहे है । कुष्ट रोगियों के नजदीकी सम्पर्क में रहने वाले व्यक्तियो का डोमोप्राफिलैक्टिक एजेन्ट अर्थात सल्फाडायजीन से उपचार किया जा रहा है । वाहक अवस्था का उन्मूलन करने के लिये रोगवाहकों के लिये एन्टीबायोटिक्स का भी समर्थन किया जाता है । अति सघन और चिकित्सीय रूप से पर्यवेक्षित समुदायों के लिये बड़े पैमाने पर रसायन रोग निरोधन की सिफारिश की जाती है और प्रकोप हो जाने की अवस्था में अधिक खतरे वाले समूहों के लिये नैनीगोकोकल वैक्सीन का टीका लगाने की सलाह दी जाती है ।

कैंसर के रोगियों का उपचार

427. **श्री ईश दत्त यादव** : क्या **स्वास्थ्य और परिवार कल्याण** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार 60 प्रतिशत से अधिक कैंसर के रोगियों को किसी न किसी अवस्था में विकिरण चिकित्सा की आवश्यकता होती है ;

(ख) क्या भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद् इस संबंध में 1971 से निरन्तर सिफारिश करती रही है ;

(ग) क्या यह भी सच है कि उपर्युक्त सिफारिशों के बावजूद उत्तर प्रदेश के किसी भी बड़े अस्पताल में या तो विकिरण चिकित्सा उपलब्ध नहीं है या इन अस्पतालों में उपलब्ध विकरण चिकित्सा का पूरी क्षमता का सही उपयोग नहीं किया जा रहा है और न सरकार ने राज्य मे इसके विकास हेतु कोई कार्यवाही की है; और

(घ) यदि उपर्युक्त भाग (ग) का उत्तर हां, है, तो क्या केन्द्रीय सरकार ने इस संबंध में राज्य सरकार को प्रभावी कार्यवाही करने के निदेश जारी किये है और यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो उसके कारण क्या हैं ?

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री (श्री मोती लाल वोरा) : (क) कैंसर रोगियों के रोग की दशा और अवस्था को देखते हुए रेडियोथेरेपी उपचार दिया जाता है ।

(ख) भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद् ने संबंधित विभागों में पृथक डिग्रियां/डिप्लोमा प्रदान करने के लिये रेडियो डायगोनेसिस और रेडियोथेरेपी को एक अलग विशेषता निर्धारित किया है ।

(ग) उत्तर प्रदेश के निम्नलिखित अस्पतालों में रेडियोथेरेपी की सुविधा :–

1. एस.एन. मैडिकल कालेज, अस्पताल आगरा ।

2. जे. एन. मैडिकल कालेज एवं अस्पताल, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ ।

3. कमला नेहरू मिमोरियल अस्पताल, इलाहाबाद ।

4. हनुमान प्रसाद पोद्दार कैंसर अस्पताल, गोरखपुर ।

5. जे. के. कैंसर संस्थान, कानपुर ।

6. के. जी. मैडिकल कालेज एवं अस्पताल, लखनऊ ।

7. आयुर्विज्ञान संस्थान, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ।

8. भारतीय रेलवे कैंसर संस्थान और अनुसंधान केन्द्र, वाराणसी ।

उपलब्ध सुविधाओं का पूरी तरह से उपयोग किया जा रहा है ।

(घ) ऐसे संस्थानों के जो रेडियोथेरेपी सुविधा स्थापित करना चाहते है, भारत सरकार द्वारा स्थापित की गई टेलिथेरेपी एककों संबंधी स्थायी समिति को क्लिअरेंस के लिये आवेदन करना होगा और यह समिति केवल तभी क्लिअरेंस देती हैं, जब उस संस्थान के पास रेडियोथेरेपी विभाग को चलाने के लिये आवश्यक कर्मचारी हों । केन्सर नियन्त्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत, भारत सरकार कोबाल्ट थेरेपी की सुविधायें स्थापित करने के लिये संस्थानों को 12.00 लाख रूपये की वित्तीय सहायता देती है । देश में सभी मान्यता-प्राप्त सरकारी मैडिकल कालेजों में कोबाल्ट थेरेपी सुविधाओं को चरणवार ढंग से स्थापित करने का विचार है ।

रक्षा अनुसंधान पर व्यय

428. **श्री ईश दत्त यादव** : क्या रक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या देश में अनुसंधान पर होने वाले व्यय का एक तिहाई भाग केवल सैनिक अनुसंधान पर खर्च होता है ;

(ख) यदि हां, तो पिछले तीन वर्षों के दौरान सैनिक अनुसंधान पर किए व्यय का वर्ष-वार ब्यौरा क्या है ;

(ग) इस व्यय में सम्मिलित विभिन्न अनुसंधान/शोध कार्य के विषय व अन्य विवरण क्या हैं और क्या इस अनुसंधान कार्य से होने वाले लाभों की जानकारी देशवासियो को दी गई है और यदि नहीं, तो उसके क्या कारण हैं ?

(घ) चालू वर्ष में इस अनुसंधान कार्य में कितने नए वैज्ञानिकों को सम्मिलित किया गया है तथा पिछले वर्ष की तुलना में उनकी संख्या में कितने प्रतिशत वृद्धि हुई है ; और

(ङ) प्रति वर्ष कितने वैज्ञानिक इन कार्यों में लगाए जा रहे हैं और क्या यह सच है कि पाकिस्तान की तुलना में इन वैज्ञानिकों की प्रतिशत अत्यन्त कम है और यदि हां, तो उसके क्या कारण हैं?

रक्षा मंत्रालय में रक्षा उत्पादन और पूर्ति विभाग में राज्य मंत्री (श्री चिंतामणि पाणिग्रही) : (क) रक्षा अनुसंधान तथा विकास से संबंधित खर्च रक्षा व्यय का ही एक भाग है । अतः यह खर्च सिविल क्षेत्र में किए गए अनुसंधान तथा विकास संबंधी कुल खर्च के अन्तर्गत नहीं आता है ।

(ख) पिछले तीन वर्षों में रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन पर किए गए खर्च का वर्ष वार ब्यौरा इस प्रकार है :—

(करोड़ रुपयों में)

वर्ष	रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन पर किया गया खर्च
1985-86	315.00
1986-87	431.00
1987-88	549.39